University in News on 24 February 2020

Amar Ujala- My City Page 5

दाखिले से पहले विभागों का एकेडमिक ऑडिट

लविवि बाहरी एजेंसी का लेगा सहयोग, विभागों की क्षमता-प्रदर्शन का होगा आकलन

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय शैक्षिक सत्र 2020-21 से पहले अपने सभी विभागों का एकेडमिक ऑडिट कराएगा। इस काम में बाहरी एजेंसी का सहयोग लिया जाएगा। इसमें विभागों में चलने वाले पाठ्यक्रम, शिक्षक, संसाधन, विद्यार्थियों का प्रदर्शन तथा बुनियादी सुविधाओं को शामिल किया जाएगा। आकलन के बाद इसकी रिपोर्ट विवि अपनी वेबसाइट पर जारी करेगा। इसकी सहायता से दाखिले के इच्छुक अभ्यर्थी उस विभाग के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। एकेडमिक ऑडिट के आधार पर लविवि प्रशासन इन विभागों की समस्याओं आदि की जानकारी भी प्राप्त कर सकेगा।

लविवि के कई विभागों में दाखिले के लिए मारामारी मचती है। जबकि कई विभाग ऐसे हैं जिनमें विद्यार्थी ढूंढ़े नहीं मिलते हैं। लविवि कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के अनुसार इसकी कई वजह हो सकती हैं। संभव है कि कई विभाग संसाधनों के अभाव में बेहतर प्रदर्शन न कर पा रहे हों। इसलिए उपलब्ध संसाधनों के आधार पर विभाग और पाठ्यक्रमों की समीक्षा की जाए। इसमें बाहर की एजेंसी को शामिल किया जाएगा, जिससे किसी प्रकार के पक्षपात की स्थिति न हो। इस तरह से विभाग की स्पष्ट स्थिति सामने होगी तथा उसकी संभावनाओं और समस्याओं पर भी ध्यान जाएगा। यह काम दाखिले से पहले मार्च के महीने में ही पूरा कर लिया जाएगा। इसके बाद ही दाखिले की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

समीक्षा के बाद ही स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों के आवेदन

विभागों के एकेडमिक ऑडिट से पहले ही लविवि ने अपने स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों की उपयोगिता की नई सिरे से समीक्षा के लिए एक समिति बनाई है। इस समीक्षा में पास होने वाले पाठ्यक्रमों के ही आवेदन मांगे जाएंगे। असल में विश्वविद्यालय में पिछले कई वर्षों से 20 से ज्यादा पाठ्यक्रम ऐसे हैं जिन्हें पर्याप्त आवेदन न होने की वजह से बंद करना पड़ता है। स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों के संचालन का खर्च उनसे मिलने वाली फीस से निकाला जाता है। इसलिए विवि ने पाठ्यक्रम के निर्धारित कुल सीट के मुकाबले कम से कम 60 फीसदी दाखिले होने पर ही उनके संचालन का नियम बनाया हुआ है। दो साल पहले यह प्रतिशत 40 फीसदी हुआ करता था। विवि के इस नियम की वजह से काफी पाठ्यक्रम ऐसे होते हैं जिन पर ताला पड़ जाता है। इसलिए इन पाठ्यक्रमों को स्थायी तौर पर बंद किया जाएगा।

विभागों का आकलन जरूरी

विश्वविद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो उससे पहले जरूरी है कि हर विभाग की स्थिति और प्रदर्शन का आकलन किया जाए। इसी के तहत अगले महीने हर विभाग का एकेडमिक ऑडिट किया जाएगा। इस काम में बाहरी एजेंसी का सहयोग भी लिया जाएगा। – **प्रो. आलोक कुमार राय,** कुलपति, लविवि

Hindustan Lucknow Live Page 2

1987-90 कॉमर्स बैच के पुरातन छात्र सम्मेलन पर कुलपति ने की घोषणा, नवम्बर में होगा सम्मेलन

शिक्षक और पूर्व छात्र देंगे छात्रवृत्ति

लखनऊ विवि

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षकों का एक नया चेहरा सामने आया है। अब वे विश्वविद्यालय से मिलने वाले वेतन के अंश यहां के छात्रों को लौटाएंगे।

छात्रों की मदद के लिए शिक्षकों के स्तर पर विशेष छात्रवृत्ति कार्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं। लखनऊ विवि के महमूदाबाद छात्रावास में 1987-90 कॉमर्स बैच के रियूनियन पर आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने यह जानकारी दी।

कुलपति ने बताया कि कई विभागों के स्तर पर काम शुरू हो गया है। इस छात्रवृत्ति से मेधावी छात्र-छात्राओं को आर्थिक मदद प्रदान की जा सकेगी। कुलपति ने बताया कि इस विशेष छात्रवृत्ति कार्यक्रम से पहले चरण में शिक्षकों को जोड़ा गया है। दूसरे चरण में विश्वविद्यालय के पुरा छात्रों और तीसरे व अन्तिम चरण में समाज के अन्य वर्गों के लोगों को जोड़ा जाएगा। उनके सहयोग लेकर छात्रों के लिए छात्रवृत्ति

अंतरराष्ट्रीय पुरा छात्र सम्मेलन होगा: विश्वविद्यालय के स्तर पर अपने पुरा छात्रों को जोड़ने के लिए एक विशेष अभियान शुरू किया जा रहा है। आगामी नवम्बर माह में 100 वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में प्रस्तावित समारोह में एक अंतरराष्ट्रीय पुरा छात्र सम्मेलन भी आयोजित किया जाएगा। इसमें, विश्वविद्यालय से पढ़कर दुनिया में इसका नाम रोशन कर रहे पुरा छात्रों को आमंत्रित किया जाएगा।

लविवि में 1987-90 कॉमर्स बैच के पुरातन छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया

सालों बाद मिले तो पुराने दिनों की यादें हुईं ताजा

रि-यूनियन 2020 के नाम पर आयोजित इस कार्यक्रम में 1987-90 बैच के लगभग 60 छात्रों ने सहभागिता की। इस कार्यक्रम में 1986-89 एवं 1988-91 के कुछ पुरा छात्र भी आए थे। निदेशक प्लेसमेंट सेल प्रो. मधुरिमा लाल, डॉ. ओपी शुक्ला, डॉ. महेंद्र अग्निहोत्री, प्रो. राम मिलन यादव, डॉ. अवधेश कुमार, डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव के साथ कई शिक्षक व छात्र मौजूद रहे। महमूदाबाद छात्रावास के पूर्व अंतःवासियों ने छात्रावास में पानी की कमी को देखते हुए समरसेबल बोरिंग कराने का निर्णय लिया। कुलपति ने बोरिंग का उद्घाटन भी किया।

पुराने छात्र क्लास लेने आएं

कुलपति ने आगामी सत्र से शुरू हो रहे सीबीसीएस सिस्टम के बारे में जानकारी दी। बताया कि वह विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को बाहर से बुलाकर उनका योगदान लिया जाएगा। उन्होंने इस कार्यक्रम में आए हुए विभिन्न चार्टर्ड अकाउंटेंट से अपील भी किया कि वह आएं और विषय को पढ़ाने में अपना भी योगदान अवश्य दें।

पुरातन छात्रों ने की आर्थिक मदद की पेशकश

कार्यक्रम के दौरान महमूदाबाद छात्रावास के छात्रों की ओर से रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। इस दौरान छात्रावास की मौजूदा समस्याओं को उठाया गया। इसमें, छतों से पानी का टपकने से लेकर बाथरूम कर की समस्या शामिल थी। पुरातन छात्रों की ओर से आर्थिक मदद की पेशकश की गई।

NBT Page 7

लखनऊ यूनिवर्सिटी में चल रहे भारतीय भाषा महोत्सव के दूसरे दिन बोले विशेषज्ञ

'आज के समय में कैसे जिया जाए, यह बड़ा सवाल है'

■ एनबीटी, लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय (एलयू) में चल रहे भारतीय भाषा महोत्सव के दूसरे दिन रविवार को विशेषज्ञों ने हिन्दी में ज्ञान का साहित्य और भाषा की संस्कृति पर चर्चा की। कार्यक्रम एलयू के अलग-अलग सभागार में पांच सत्रों में हुआ।

पहले सत्र में उच्च हरिकृष्ण अवस्थी सभागार में हिन्दी में विधि लेखन विषय पर बोलते हुए डॉ. राम अवतार सिंह ने कहा कि हिन्दी भाषा में विधि लेखन स्वतंत्रता के बाद से शुरू हुआ। विधि राष्ट्रीय लोक चेतना से पैदा होती है और भाषा की लोकचेतना के कमजोर होने पर चेतना कमजोर पड़ जाती है। भाषा और विधि में जुड़वा बहन का रिश्ता होता है। हालांकि, राष्ट्रीय कोर्ट और हाई कोर्ट में हिन्दी की व्यवस्था नहीं है। वहीं, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा पश्चिमी देशों में ज्ञान की अवधारणा नियंत्रण के आधार पर टिकी हुई है। विचार ही इंसान को जानवरों से अलग करता है। उन्होंने कहा कि आज के समय में कैसे जिया जाए, यह एक बड़ा प्रश्न है। विकास ही विकल्प है, जिसे परंपरा के अनुकूल बनाना होगा।

भारतीय भाषा बढ़ाने में संस्थाओं का खासा योगदान

एपी सेन सभागार में दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि भाषा के अलग-अलग रूप हैं, जिस भाषा से राष्ट्रीयता का बोध जुड़ा है वही राष्ट्रभाषा है। भारतीय भाषाओं की आत्मिक चेतना को जगाने में संस्थाओं का खासा योगदान है। कार्यक्रम के दौरान 'हिन्दी के विकास में दक्षिण की संस्थाओं का अवदान' विषय पर वक्ता प्रो. राममोहन पाठक, डॉ. उदय प्रताप सिंह और तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी की अध्यक्ष प्रो. निर्मला मौर्य ने भी अपने विचार रखे। इसके अलावा मालवीय सभागार में तीसरे सत्र में 'हिन्दी में विज्ञान लेखन', एपी सेन सभागार में चौथे सत्र में 'हिन्दी सेवी संस्थाएं' और फिर मालवीय सभागार में पांचवे सत्र में 'समेकित भारतीय साहित्य' विषय पर विशेषज्ञों ने विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान प्रो. भूमिक देव, प्रो. निमिष कपूर, प्रो. किशोर पवार, प्रो. वी.पी. सिंह, प्रो शैलेन्द्र नाथ कपूर, प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष, मृदुला गर्ग, दामोदर खड़से, प्रो. इकबाल, प्रो.राजेन्द्रनाथ मिश्र, प्रो.शेषरत्नम, प्रो. आलोक गुप्त सहित कई विशेषज्ञ मौजूद रहे।

एलयू के मालवीय सभागार में भारतीय भाषा महोत्सव के तीसरे सत्र में विशेषज्ञों ने 'हिन्दी में विज्ञान लेखन' विषय पर चर्चा की।

'उत्तर भारत के लिए जरूरी हैं ऐसे महोत्सव'

भारतीय भाषा महोत्सव में हिन्दी के कई विद्वान भी मौजूद रहे।

अवध भारती संस्थान, हैदराबाद के अध्यक्ष पं. राम बल्लभ मिश्रि ने कहा कि ऐसे समारोह लखनऊ ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के लिए जरूरी हैं। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के प्रो. नरीनकेट लोहनी ने कहा कि ऐसे आयोजन होने से भाषाओं के आदान-प्रदान होंगे। बाहर के देशों में भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के असर दिख रहे हैं। चीन में 15 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। व्यावहारिक क्षेत्र में हिन्दी की आज जरूरत पड़ रही है। सागर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि भाषाओं की एकता के सबब मौजूदा साहित्य में प्रतिष्ठा, अस्मिताओं, पर्यावरण और संस्कृति जैसे कई विषयों पर चर्चा बढ़ी है। प्रवक्ती संस्थान, नई दिल्ली के संपादक प्रो. राकेश पांडेय ने कहा कि समारोह का अंतरराष्ट्रीय महत्व है। सागर विवि के प्रो. हरि सिंह गौड़ ने कहा कि हिन्दी अपने रंग दुनिया में फैला देती है।

हिन्दी में नये शब्दों का जन्म न होना चिंताजनक

लविवि के शताब्दी वर्ष में भाषा संस्थान के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय भारतीय भाषा महोत्सव का दूसरा दिन

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी में नए शब्दों का जन्म कम हो रहा है, यह बेहद चिंताजनक है। मातृभाषा में अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति सबसे सरल होती है। हिंदी भाषा में विज्ञान लेखन इसलिए बड़ी चुनौती होती है। गोरखपुर और रुहेलखंड विवि के पूर्व कुलपति प्रो. भूमित्र देव ने रविवार को लविवि के मालवीय सभागार में यह बातें कहीं। वे लविवि के शताब्दी वर्ष के तहत हिंदी विभाग तथा उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के सहयोग से आयोजित भारतीय भाषा महोत्सव के दूसरे दिन विज्ञान लेखन पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे।

प्रो. देव ने कहा कि आज विश्व में जो शब्द युद्ध हो रहा है, उसमें हिन्दी क्या भूमिका निभा रही है। इस पर हमें विचार करना होगा। उन्होंने 'सेल्फी' और 'योग' शब्द के इतिहास विकास और प्रभाव का मूल्यांकन करने की बात कही। प्रो. निमिष कपूर ने कहा कि हमें विषयों की सीमाएं तोड़ने की कोशिश करनी होगी। हमें शोध या तकनीकी भाषा की बजाय सहज भाषा में लोगों तक पहुंचना होगा। प्रो. किशोर पवार ने हिन्दी में अच्छा विज्ञान लेखन कैसे हो व हम किन विषयों का चुनाव करें, इस बारे में अपनी बात रखी। प्रो. वीपी सिंह ने कहा कि हिन्दी विज्ञान लेखन में कौशल विकास के कार्यक्रम शुरू होने चाहिए। एक अन्य सत्र में हिन्दी में विधि लेखन के विषय पर बोलते हुए डॉ. रामअवतार सिंह ने कहा कि हिन्दी भाषा में विधि लेखन स्वतंत्रता के बाद शुरू हुआ। विधि राष्ट्रीय लोक चेतना से पैदा होती है, और भाषा की लोकचेतना कमजोर होने पर दोनो कमजोर पड़ जाती है। शाम के सत्र में कवि सम्मेलन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए गए। इस मौके पर उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. राजनारायण शुक्ल के साथ ही हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, आयोजन सचिव प्रो. पवन अग्रवाल के साथ ही प्रो. सुरेश रितुपर्ण, प्रो. यास्मीन सुल्ताना तथा इंडोनेशिया से आए पद्मश्री अगर इंद्रा उदयना तथा सत्यप्रकाश सिंह, राहुल वाजपेयी, संतोष कुमार, शुभम, अर्चना, अंजू, प्रियंका, आशीष, हर्ष, रामहेत, ब्रजेश आदि उपस्थित रहे।

भारतीय भाषा महोत्सव में जानकारी देते प्रो. वीपी शर्मा।

भाषा के विविध रूप पर आत्मिक चेतना एक

हिंदी सेवी संस्थाओं पर बोलते हुए डॉ. बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि भाषा के विविध रूप अवश्य हैं पर उनकी आत्मिक चेतना एक ही है। पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने कहा था कि, इस देश का प्रधानमंत्री बनने के लिए मुझे जितनी हिंदी आनी चाहिए थी, मुझे उतनी हिन्दी नहीं आती, इसलिए मैं प्रधानमंत्री पद के योग्य नहीं हूं। प्रो. राममोहन पाठक ने कहा कि दक्षिण और उत्तर को बांधने का सशक्त कार्य भाषा ही कर सकती है। तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी की अध्यक्ष प्रो. निर्मला मौर्य ने कहा कि भारत एक कमंडल है, जिसमें सभी भारतीय भाषायें विद्यमान हैं।

इन सत्रों का भी हुआ आयोजन

■ राष्ट्रीय संस्कृति की अवधारणा

भारतीय संस्कृति में पारस्परिक सद्भाव विषय पर प्रो. शैलेन्द्र नाथ कपूर ने कहा कि क्रियाएं जो मनुष्य में सरलता का संचार करें वही संस्कृति है। आकस्मिक असुविधाओं से जो आचार्य को बचाए वही छात्र है। डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष जे कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राजनीतिक राष्ट्रवाद दोनों अलग-अलग अवधारणाएं हैं।

■ हमारे समय के शब्द

हमारे समय के शब्द विषयक सत्र की अध्यक्षता कर रहीं दिल्ली से आईं मृदुला गर्ग ने कहा कि लेखक के सामने चुनौती यह है कि बोलचाल की भाषा को सीमा न बनने दें। लेखक किरदार बनाता है और उसके बाद उससे अपनी बातों को कहलाता है। साहित्य को पढ़ने पर ही भाषा समृद्ध होगी। साहित्य की समझ न होने से अर्थ का अनर्थ तक हो जाता है।

■ समेकित भारतीय साहित्य

महाराष्ट्र से पधारे दामोदर खड़स ने कहा कि हिन्दी मराठी संबंधों की शुरुआत शिवाजी के समय से हुई, जिसे भूषण ने और पुष्ट कर दिया। मराठी लेखक विजय तेंदुलकर की सभी रचनाओं का अनुवाद हिन्दी में हुआ। प्रो. इकबाल ने तमिल साहित्य पर बात करते हुए बताया कि इसका आरंभिक साहित्य 300 ई.पू. से 600 ई.तक मिलता है।